विशिष्ट बच्चों की शिक्षा
एक केस अध्ययन

संजीव कुमार शुक्ला*

शिक्षा मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि यह मनुष्य के जीवन में परिवर्तन लाती है और उसके व्यवहार को परिष्कृत करती है। इस केस अध्ययन में, विशिष्ट बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में, अध्ययन किया गया है। शोधार्थी के द्वारा केस अध्ययन के लिए चेतना संस्थान, लखनऊ के विशिष्ट बच्चों को लिया गया तथा प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं प्रेक्षण प्रविधि का उपयोग किया गया है। चेतना संस्थान का मुख्य उद्देश्य विशिष्ट बच्चों को विशिष्ट शिक्षा प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाना है। शोध पत्र में संस्थान द्वारा बच्चों को प्रदान की जा रही शिक्षा सुविधाओं तथा चिकित्सा सेवाओं पर विशेष बल दिया गया है।

भारत एक जनतांत्रिक देश है, जहाँ पर प्रत्येक नागरिक को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार है। वर्तमान समय में शिक्षा के इच्छुक विद्यार्थियों की संख्या में अपेक्षाकृत कई गुना वृद्धि हो रही है। जगह-जगह पर छोटे-छोटे विद्यालय खुल रहे हैं जहाँ न तो खेल के मैदान हैं, न चिकित्सा सुविधा, न पुस्तकालय, और न प्रयोगशालाएँ जैसी मूलभूत सुविधाएँ, जिसके कारण बच्चे का न तो मानसिक विकास हो पाता है और न ही शारीरिक विकास! ऐसी स्थिति में एक सामान्य कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा जब सामान्य विद्यार्थियों की ही आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाती है तो विशिष्ट विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार संभव है? क्योंकि इन विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ एवं समस्याएँ सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न हैं, अतः इन बच्चों को शिक्षित करने के लिए विशेष शिक्षा प्रदान किए जाने की आवश्यकता है।

शिक्षा, वास्तव में सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के जन्मजात गुणों के स्वाभाविक व निर्बाध विकास की वह प्रक्रिया है जो उसके सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन व समायोजन में सहायक होती है तथा उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर उसके भावी जीवन को सुखी व संतोषमय बनाने के योग्य बनाती है। बाल विकास के आधार पर बच्चों का वर्गीकरण दो प्रकार से किया गया है—सामान्य बच्चे व विशिष्ट बच्चे और इस विशिष्टता के क्रम में प्रखर बुद्धि वाले बच्चों से लेकर बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चों को रखा गया है। मनोविज्ञान के विकास से पूर्व समस्त बच्चों

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, श्री गांधी महाविद्यालय, सिधौली, सीतापुर, उत्तर प्रदेश 261303

© NCERT not to be republished

को सामान्य मानकर चला जाता था। केवल उन थोड़े से, जो सामान्य से अत्यधिक भिन्न थे, असामान्य माना जाता था। धीरे-धीरे समय व परिवेश बदलता गया, मनोविज्ञान के विकास, मानसिक मापन तथा सांख्यिकी के विकास के साथ उन बच्चों की ओर ध्यान गया जो सामान्य बच्चों से थोड़ा भी भिन्न थे। उन्हें विशिष्ट की श्रेणी में रखा गया। यह विशिष्टता किसी भी प्रकार की हो सकती है, जैसे—लंबाई, भार, मानसिक स्तर, शारीरिक स्तर, संवेगात्मक आदि। वे बच्चे जो सामान्य अथवा औसत से बहुत अधिक विचलित होते हैं, चाहे वह विचलन किसी भी दिशा में हो, विशिष्ट बच्चे या असाधारण बच्चे कहलाते हैं। विशिष्ट बच्चे की व्याख्या विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से की है। क्रो एवं क्रो के शब्दों में, ''विशिष्ट प्रकार या विशिष्ट पद किसी गुण या उन गुणों से युक्त व्यक्ति पर लागू होता है जिसके कारण वह व्यक्ति अपने साथियों का ध्यान अपनी ओर विशिष्ट रूप से आकृष्ट करता है तथा उसके व्यवहार की अनुक्रियाएँ भी प्रभावित होती हैं।'' (भार्गव, महेश; 2007) विशिष्ट बच्चा सामान्य बच्चों की कक्षा में किसी भी रूप से लाभान्वित नहीं होता है। सामान्य पाठ्यक्रम या तो उनके लिए कठिन होता है या इतना सरल होता है कि वो इन बच्चों के सामने कोई चुनौती नहीं रख पाता। इन्हीं सब आवश्यकताओं एवं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की। इस केस अध्ययन में शोधार्थी ने विशिष्ट बच्चों की समस्याओं को उजागर किया और उन समस्याओं के निवारण हेतु सुझाव भी दिए हैं।

समस्या कथन

''चेतना संस्थान, लखनऊ में विशिष्ट बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन।''

उद्देश्य कथन

- चेतना संस्थान की पृष्ठभूमि और इसके इतिहास का अध्ययन करना।
- चेतना संस्थान के लक्ष्यों और उद्देश्यों का अध्ययन करना।
- चेतना संस्थान द्वारा बच्चों को दी जा रही सुविधाओं का अध्ययन करना।
- चेतना संस्थान में प्रयोग की जा रही शिक्षण विधि की प्रकृति का अध्ययन और अवलोकन करना।
- चेतना संस्थान की भविष्य की योजनाओं का अध्ययन करना।
- विशिष्ट बच्चों के लिए संगठित और संचालित किए जा रहे विशिष्ट कार्यों एवं क्रियाओं का अध्ययन करना।
- चेतना संस्थान के क्रियाकलापों के बारे में बच्चों के अभिभावकों के विचारों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिसीमाएँ

केवल एक संस्थान (चेतना संस्थान, लखनऊ) का अध्ययन करना।

शोध विधि

इस अध्ययन के लिए केस अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

इस अध्ययन में उत्तर प्रदेश के लखनऊ जनपद के चेतना संस्थान को लिया गया। न्यादर्श के रूप में इस संस्थान के विशिष्ट बच्चों को लिया गया।

© NCERT not to be republished

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अनुसंधान के उपकरण के रूप में साक्षात्कार, प्रश्नावली तथा प्रेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया।

परिणाम और व्याख्या

चेतना संस्थान की पृष्ठभूमि और इसके इतिहास का अध्ययन करना

चेतना संस्थान, अलीगंज सेक्टर-सी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थित एक अशासकीय स्वैच्छिक संगठन है, जिसकी स्थापना सन् 1964 में, बसंत पंचमी के दिन हुई थी। संस्था की शुरुआत में केवल दो कमरे थे। धीरे-धीरे इसका स्वरूप बदलता गया और यह विकास की ओर हमेशा अग्रसर रहा। आज यह संस्थान उत्तर प्रदेश की मुख्य संस्थाओं में से एक है, जो दिव्यांगों के हित के लिए कार्य कर रही है। मुख्यतः यह संस्थान बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के लिए कार्य कर रहा था। परंतु आज अत्यधिक सुविधाओं और जगह (63000 वर्ग फुट) के कारण श्रवणबाधित, बौद्धिक विकार तथा शारीरिक दिव्यांग बच्चों के लिए भी कार्य कर रहा है। 'चेतना संस्थान' राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश और भारतीय पुनर्वास केंद्र, नई दिल्ली से संबद्ध है। अतः इस संस्थान द्वारा विशेष कोर्सों का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

राष्ट्रीय योजनाओं के तहत संस्थान को समय-समय पर अनुदान राशि प्राप्त होती है। समाज के प्रतिष्ठित लोग भी संस्थान की आर्थिक सहायता करते हैं। 'चेतना संस्थान' इन विशिष्ट बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। यह संस्थान चार भागों में विभाजित है—

- पहले भाग में बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इस भाग में आठ कमरे हैं तथा ग्यारह शिक्षक हैं।
- दूसरे भाग में श्रवणबाधित बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इस भाग में भी आठ कमरे हैं तथा ग्यारह शिक्षक हैं।
- तीसरे भाग में तीन कमरे हैं, जिसमें बालक-बालिकाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण में मोमबत्ती बनाना, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन कमरों का आकार 16×32 वर्ग फुट है।
- चौथे भाग में एक थेरेपी (चिकित्सा) केंद्र है। इस केंद्र में चार कमरे हैं, जिनका आकार 14×20 वर्ग फुट है। इनमें से एक छोटा कमरा है जिसमें थेरेपिस्ट (चिकित्सक) अपने सुझावों से अध्यापकों और विशिष्ट बच्चों को समय-समय पर अवगत कराते रहते हैं।

चेतना संस्थान के लक्ष्य और उद्देश्य

चेतना संस्थान के निम्नलिखित लक्ष्य और उद्देश्य हैं —

- **बौद्धिक अक्षमता वाले एवं श्रवणबाधित बच्चों को शिक्षा देना**

  बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को विशिष्ट शिक्षा तथा श्रवणबाधित बच्चों को विशिष्ट प्रकार से सामान्यतः शिक्षा देना, संस्थान का प्रमुख उद्देश्य है। संस्थान में इन बच्चों को शिक्षित करने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की व्यवस्था है, जो बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रयासरत हैं।

- **बोलने में अक्षम बच्चों को स्पीच थेरेपी (वाक् चिकित्सा) देना**

  बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के साथ-साथ श्रवणबाधित बच्चों का भी एक बड़ा समूह संस्थान में शिक्षा ग्रहण कर रहा है। इनका सामान्य पाठ्यक्रम है। इन्हें बोलने में सक्षम बनाने लिए स्पीच थेरेपी (वाक् चिकित्सा) देना संस्थान का दूसरा प्रमुख उद्देश्य है। इसके लिए एक स्पीच थेरेपिस्ट (वाक् चिकित्सक) की व्यवस्था है, जो प्रतिदिन बोलने में अक्षम बच्चों को बोलने में प्रशिक्षित करता है।

- **शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों हेतु सुविधाएँ उपलब्ध कराना**

  चेतना संस्थान का तीसरा मुख्य उद्देश्य शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सहायता देना है, परंतु जगह की कमी के कारण इसके लिए अभी तक कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है। केवल दस बालक/बालिकाएँ शारीरिक रूप से अक्षम हैं, जिन्हें केवल चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। भविष्य में इन बच्चों के लिए भी चेतना संस्थान शिक्षा व्यवस्था व अन्य सुविधाएँ देने के लिए प्रयासरत है।

- **बौद्धिक विकार से पीड़ित बच्चों को सुविधाएँ उपलब्ध कराना**

  बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के साथ बौद्धिक विकार से पीड़ित बच्चों को सहायता देना, संस्थान का प्रमुख उद्देश्य है, परंतु जगह की कमी के कारण इसके लिए भी अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। संस्थान में कुल 35 बच्चे बौद्धिक विकार से पीड़ित हैं। इस प्रकार के बच्चों में मस्तिष्कीय क्षति के कारण कुछ मांसपेशियों की गति अनियंत्रित हो जाती है, जिसके फलस्वरूप बच्चे की मांसपेशीय समायोजन में कमी आ जाती है। इन बच्चों को थेरेपी देना, शिक्षित करना, व्यावसायिक प्रशिक्षण देना संस्थान का प्रमुख उद्देश्य है।

- **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देना**

  बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण दिए जाते हैं। इनमें से प्रमुख हैं —

  (i) मोमबत्ती बनाना; (ii) सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण देना; (iii) कपड़े की बुनाई का प्रशिक्षण देना; (iv) बागवानी; (v) मूर्ति बनाना; (vi) पुष्प संरक्षण प्रशिक्षण।

- **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के अभिभावकों को परामर्श देना**

  बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के अभिभावकों को हर महीने के दूसरे शनिवार को परामर्श दिया जाता है। इसमें सभी बच्चों के अभिभावक सभी अध्यापक, चिकित्सक एवं सचिव उपस्थित रहते हैं। इस परामर्श के माध्यम से उन्हें उचित सुझाव व उपचार की विधि एवं समस्याओं का निदान प्रदान किया जाता है।

- **बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के अभिभावकों का बच्चों को व्यक्तिगत प्रशिक्षण देने के लिए पथ-प्रदर्शन करना**

  समय-समय पर संस्थान बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों के अभिभावकों का पथ-प्रदर्शन करता रहता है। अभिभावक अपने बच्चों को किस प्रकार शिक्षा दें, किस प्रकार उनका ध्यान रखें और उन्हें कैसा वातावरण दिया

© NCERT not to be republished

जाए, संस्थान इसका प्रशिक्षण प्रदान कर उनका पथ-प्रदर्शन करता है।

- **व्यावहारिक समस्या का समाधान करना**
  चेतना संस्थान में बच्चों एवं उनके अभिभावकों की व्यावहारिक समस्या का समाधान करने के लिए एक व्यावहारिक चिकित्सक (थेरेपिस्ट) की व्यवस्था है, जो समय-समय पर बच्चों एवं उनके अभिभावकों की व्यावहारिक समस्याओं का निदान करता है।

चेतना संस्थान द्वारा बच्चों को दी जा रही सुविधाओं का अध्ययन

चेतना संस्थान में विशिष्ट बच्चों को दी जा रही सुविधाओं का आकलन करने के लिए शोधार्थी ने अध्यापकों को दी गई प्रश्नावली, अभिभावकों का साक्षात्कार, विशिष्ट बच्चों का साक्षात्कार तथा स्वयं द्वारा किए गए अवलोकन कर निष्कर्ष दिए हैं, जो निम्न प्रकार हैं—

चेतना संस्थान में चिकित्सा सुविधा विशिष्ट बच्चों की प्रकृति आवश्यकतानुसार दी जाती है। संस्थान में, विशेषकर बिना ऑपरेशन एवं दवा के द्वारा निम्नलिखित सेवाएँ दी जाती हैं —

- **फ़िज़ियो-थेरेपी (भौतिक चिकित्सा)**
  इस प्रकार की थेरेपी में शारीरिक अभ्यास या किसी रोगग्रस्त अंग को हलके-हलके हाथों से मालिश करके या फिर हलकी गरमाहट देकर आसानी से संस्थान में ठीक किया जाता है। इसके लिए संस्थान में एक थेरेपी केंद्र है जिसमें आवश्यक लगभग सभी सामान— स्थिर साइकिलिंग, रनिंग पैड, मसाज मशीन इत्यादि की व्यवस्था है। इस कार्य की देख-रेख के लिए एक थेरेपी विशेषज्ञ कार्यरत है।

- **ऑक्युपेशनल थेरेपी**
  संस्थान में ऑक्युपेशनल थेरेपी का भी प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की थेरेपी में जिन बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक अक्षमता के कारण कोई भी अंग प्रभावित होता है, उनसे छोटे-छोटे काम कराकर, खेल खिलाकर शारीरिक व्यायाम कराया जाता है। यह थेरेपी विशेषकर छोटे बच्चों को दी जाती है। ऑक्युपेशनल थेरेपी के लिए संस्थान में, एक ऑक्युपेशनल थेरेपिस्ट की व्यवस्था है जो प्रतिदिन बच्चों को अपनी थेरेपी से लाभान्वित करता है।

- **स्पीच थेरेपी (वाक् चिकित्सा)**
  संस्थान में बोलने में अक्षम बच्चों के लिए स्पीच थेरेपी (वाक् चिकित्सा) की व्यवस्था है। इसके लिए संस्थान में एक स्पीच थेरेपिस्ट की व्यवस्था भी है। स्पीच थेरेपिस्ट व अन्य शिक्षक के माध्यम से इन बच्चों को प्रतिदिन स्पीच थेरेपी द्वारा अभ्यास कराया जाता है। स्पीच थेरेपिस्ट के अनुसार निम्नलिखित उपाय बोलने में अक्षम बच्चों के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं —

  (i) बच्चों को बोलने का प्रशिक्षण तथा पुनः प्रशिक्षण देना।

  (ii) उनके लिए ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करना जो उनके बोलने में सहायक हों।

  (iii) बोलने के लिए बच्चों को संवेगात्मक रूप से तैयार करना।

  (iv) अभिभावकों एवं शिक्षकों का कर्तव्य है कि ऐसे बच्चों के साथ उपेक्षापूर्ण

© NCERT not to be republished

व्यवहार न अपनाएँ, बल्कि सुधार के लिए प्रोत्साहित करें।

(v) समय-समय पर स्कूल के डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक व मनोचिकित्सक से सहायता लेना।

- **बौद्धिक विकार के लिए चिकित्सालय**
  संस्थान में बौद्धिक विकार से पीड़ित बालक व बालिकाएँ हैं। इनके मस्तिष्क का विकास बहुत देर से होता है। इस कारण इनके शारीरिक अंग भी प्रभावित होते हैं तथा उनकी मांसपेशियों की गति अनियंत्रित होती है। इनके उपचार के लिए संस्थान में चिकित्सालय है। इस चिकित्सालय में विभिन्न उपचारों के द्वारा बौद्धिक विकार से पीड़ित बच्चों का उपचार किया जाता है। प्राथमिक उपचार से काफ़ी हद तक सुधार किया जाता है।
- **अन्य चिकित्सीय सुविधाएँ**
  संस्थान में अतिरिक्त अन्य चिकित्सीय सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं, जो निम्नवत हैं —

(i) संस्थान में यदि किसी बच्चे को कोई गंभीर समस्या हो जाती है, तो उसके लिए 'ऑनलाइन मेडिकल केयर' की सुविधा भी उपलब्ध है। इस सुविधा के तहत किसी भी समस्या का निदान तुरंत किया जाता है।

(ii) व्यावहारिक चिकित्सा के द्वारा किसी भी समस्यात्मक व्यवहार का समाधान शीघ्रातिशीघ्र किया जाता है। इस सुविधा के लिए संस्थान के अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

(iii) संस्थान के बच्चों की मनोचिकित्सक, आर्थोपैडिक विशेषज्ञ, नाक, कान, गला विशेषज्ञ द्वारा समय-समय पर जाँच कराई जाती है।

चेतना संस्थान में प्रयोग की जा रही शिक्षण विधि की प्रकृति का अध्ययन और अवलोकन

संस्थान में विशिष्ट बच्चों को उनकी दिव्यांगता की प्रकृति एवं रुचि के अनुसार शिक्षा देने का प्रावधान बड़ा ही अनूठा है। जो शिक्षित करने योग्य बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे हैं, उन्हें सामान्य पाठ्यक्रम, जैसे—हिंदी, अंग्रेज़ी, गणित, सामान्य ज्ञान, कला इत्यादि विषयों की शिक्षा दी जाती है। चेतना संस्थान के मानसिक दिव्यांग संकाय की प्रधानाचार्या मीना तिवारी ने शोधार्थी को बताया कि अध्यापक इन्हें शिक्षित करने के लिए अधिकाधिक रंगीन चित्रों, मॉडलों आदि के प्रयोग के द्वारा अपनी शिक्षण विधि को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करते हैं, जैसे — गणित विषय में कुछ संख्याओं को जोड़ना है, तो लकड़ी के बने छोटे-छोटे बक्सों का प्रयोग करते हैं। इससे ये बच्चे काफ़ी रुचि के साथ आसानी से किसी भी जोड़ या घटाना को हल करते हैं। अध्यापक बार-बार दोहराने की विधि को अपनाने पर बल देते हैं और एक पाठ को समाप्त करने में लगभग एक महीना लग जाता है। जो बच्चे अत्यधिक बौद्धिक अक्षमता के होते हैं, उन्हें केवल स्वयं का कार्य करने व रुचि के अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, जैसे—सिलाई-कढ़ाई, आर्ट बनाना, मूर्ति बनाना, मोमबत्ती बनाना, बागवानी इत्यादि। यह प्रशिक्षण प्रतिदिन दिए जाते हैं। चेतना संस्थान के श्रवण दिव्यांग संकाय की प्रधानाचार्या अंजना मिश्रा ने शोधार्थी को बताया कि शिक्षक श्रवणबाधित बच्चों को शिक्षित करने में अनुकरण विधि, चित्रों का अत्यधिक प्रयोग जैसी

© NCERT not to be republished

अनेक शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं। यद्यपि बच्चों का पाठ्यक्रम सामान्य न होने के बावजूद भी शिक्षक, शिक्षण विधि में बोलने के साथ-साथ हाथों का उचित प्रयोग करते हैं, जिससे बच्चे कम समय में किसी भी विषय-वस्तु को सीख लेते हैं। अनुकरण विधि में शिक्षक को काफ़ी आसानी होती है और यह बच्चों के लिए अत्यंत प्रभावी होती है।

श्रवणबाधित बच्चों की कक्षाएँ काफ़ी सुसज्जित बनाई जाती हैं। इन बच्चों को शिक्षित करने में, शिक्षक मॉडलों का प्रयोग भी अधिक करता है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चे, जो गायन व नृत्य में रुचि रखते हैं, उन्हें गायन व नृत्य की शिक्षा प्रतिदिन प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा दी जाती है। इसके लिए संस्थान में लगभग सभी प्रकार के वाद्ययंत्र उपलब्ध हैं। शिक्षक इन कौशलों के विकास में अनुकरण विधि एवं बार-बार किसी पंक्ति को दोहराने का अधिक प्रयोग करते हैं। जिससे बच्चा जल्दी ही इन कलाओं को सीख जाता है। शिक्षकों के अनुसार अभिभावकों को भी इन विधियों के बारे में जानकारी दी जाती है।

चेतना संस्थान की भविष्य की योजनाओं का अध्ययन करना

चेतना संस्थान एक अशासकीय स्वैच्छिक संगठन है, जिसकी भविष्य की योजनाएँ निम्नलिखित हैं —

- **शैक्षिक प्रशिक्षण केंद्र की व्यवस्था**
  चेतना संस्थान में ही शैक्षिक प्रशिक्षण की सुविधा है, परंतु प्रबंधक की यह योजना है कि भविष्य में विशेष प्रशिक्षणों के लिए एक अलग केंद्र हो। इसके लिए संस्थान का प्रबंधन प्रयासरत है, ताकि वह विशिष्ट बी.एड. व अन्य फ़ाउंडेशन कोर्सों के प्रशिक्षण की अलग से व्यवस्था कर सके।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षण के स्तर में सुधार**
  संस्थान में दिए जा रहे विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक प्रशिक्षण, जैसे— मोमबत्ती बनाना, मूर्ति बनाना, बागवानी, सिलाई-कढ़ाई इत्यादि के स्तर में सुधार करना है। इसके लिए संस्थान का प्रबंधन प्रयासरत है।
- **छात्रावास की सुविधा को बढ़ाना**
  चेतना संस्थान में एक छात्रावास संस्थान के परिसर में ही स्थित है जिसमें केवल कुछ ही शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों के रहने की व्यवस्था है, बाकी क्षेत्र में संस्थान की शिक्षिकाएँ रहती हैं। भविष्य में संस्थान सभी बच्चों के लिए छात्रावास अनिवार्य करने के बारे में विचार कर रहा है, ताकि बच्चों के मानसिक व शारीरिक विकास में प्रत्येक क्षण देखभाल की जा सके। एक अन्य छात्रावास का निर्माण कराना संस्थान की भविष्य की योजना है। इसके लिए संस्थान सरकार से सहायता राशि प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है।
- **संस्थान में ही सभी प्रकार की चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध हों**
  संस्थान में अभी केवल विभिन्न प्रकार की थेरेपी, जैसे—फ़िज़ियोथेरेपी, ऑक्युपेशनल थेरेपी, स्पीच थेरेपी की व्यवस्था है। संस्थान ने यह इच्छा ज़ाहिर की है कि सभी प्रकार की चिकित्सा सुविधाएँ, जैसे—ऑपरेशन थियेटर, विभिन्न रोगों के विशेषज्ञ डॉक्टर, दवाएँ व अन्य सुविधाओं की व्यवस्था चेतना संस्थान में ही उपलब्ध हो, इसके लिए भी संस्थान भविष्य की योजना बना रहा है।

© NCERT not to be republished

विशिष्ट बच्चों के लिए संगठित और संचालित किए जा रहे विशिष्ट कार्यों और क्रियाओं का अध्ययन करना

विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों का प्रशिक्षण विशिष्ट बच्चों की रुचि के अनुसार दिया जाता है। संस्थान में वर्तमान समय में निम्नलिखित विशिष्ट क्रियाकलापों का प्रशिक्षण दिया जाता है—

- **मोमबत्ती बनाना**

  चेतना संस्थान में विशिष्ट बच्चों को मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। ये प्रशिक्षण व्यावसायिक तौर पर दिया जाता है। इस प्रशिक्षण को देने के लिए प्रशिक्षण विशेषज्ञ की व्यवस्था है, जो प्रतिदिन विशिष्ट बच्चों को व्यावसायिक तौर पर प्रशिक्षित करता है। इस प्रशिक्षण में सबसे पहले मोम को पिघलाकर उसमें विभिन्न प्रकार के रंग घोल देते हैं और इस घोल को विभिन्न प्रकार के साँचों में डाल दिया जाता है। उस साँचे को कार्यशाला में ही बने पानी के टब में डाल दिया जाता है। साँचा ठंडा होने पर मोमबत्तियों को साँचे से निकालकर अलग कर लिया जाता है। विशिष्ट बच्चों को भविष्य में आत्मनिर्भर बनाने के लिए यह व्यावसायिक प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **सिलाई-कढ़ाई सिखाना**

  चेतना संस्थान में जो बालिकाएँ बौद्धिक विकार से ग्रसित हैं, उन्हें उनकी रुचि के अनुसार सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। एक प्रशिक्षित अध्यापिका के निर्देशन में उन्हें सिलाई-कढ़ाई का प्रशिक्षण दिया जाता है।

- **बुनाई का प्रशिक्षण**

  चेतना संस्थान में बुनाई का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को बुनाई का प्रशिक्षण देने के लिए, बुनाई के प्रशिक्षक की भी व्यवस्था है। संस्थान में एक छोटी-सी कार्यशाला है, जिसमें बुनाई के लिए चार हथकरघा मशीनें लगी हैं। इन हथकरघा मशीनों के द्वारा चादरों की बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। विभिन्न प्रकार की रंगीन चादरों को बुनकर इन्हें बाज़ार में बेच दिया जाता है। संस्थान में उपरोक्त तीन व्यावसायिक प्रशिक्षणों के अतिरिक्त मूर्तिकला, बागवानी, घर की देखभाल करने का प्रशिक्षण भी प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा दिया जाता है। सभी व्यावसायिक प्रशिक्षण बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार दिया जाता है। चेतना संस्थान में विशिष्ट बच्चों को शिक्षित एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए विशिष्ट कोर्सों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

चेतना संस्थान के क्रियाकलापों के बारे में बच्चों के अभिभावकों के विचारों का अध्ययन करना

विशिष्ट बच्चों का ज़िक्र आते ही सबसे पहले उनके अभिभावकों का ज़िक्र होता है। उनकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति कैसी है जिससे वे विशिष्ट बच्चों का संतुलित व समन्वित विकास कर सकें, इसका अध्ययन किया जाता है। शोधार्थी ने विशिष्ट बच्चों के अभिभावकों से चेतना संस्थान में शिक्षा, प्रशिक्षण व उनके बच्चों से संबंधित प्रश्न पूछे, जिससे निम्नलिखित विचार प्राप्त हुए —

- सभी अभिभावकों ने अपने बच्चों में सुधार की बात कही, उनके कथानुसार पहले उनका बच्चा अपने कार्य स्वयं नहीं कर पाता था। लेकिन जब से इस संस्थान में आया है, वह स्वयं अपना कार्य थोड़ा-थोड़ा कर लेता है।

© NCERT not to be republished

- कुछ अभिभावकों ने संस्थान में दिए जा रहे व्यावसायिक प्रशिक्षणों की सहृदय प्रशंसा की है और कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षणों में और वृद्धि की जाए, ताकि विशिष्ट बच्चे आत्मनिर्भर हो सकें, लेकिन कुछ अभिभावकों ने छोटे बच्चों को व्यावसायिक प्रशिक्षण न दिए जाने के प्रति रोष जताया है।
- कुछ अभिभावकों ने यह स्वीकार किया कि चेतना संस्थान में उनके बच्चों को सभी सुविधाएँ मिल रही हैं, लेकिन आर्थिक सुविधा से वे वंचित हैं।
- अभिभावकों ने शिक्षकों के बारे में बताया कि सभी शिक्षक उनके बच्चों से अच्छा व्यवहार करते हैं।
- कुछ अभिभावकों ने, जिनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, उन्होंने संस्थान में विगत वर्ष फ़ीस बढ़ने के कारण नाराज़गी ज़ाहिर की है और कहा है कि संस्थान का फ़ीस बढ़ाने का निर्णय उचित नहीं है।
- संस्थान द्वारा प्रदत्त यातायात सुविधा का लाभ सभी बच्चों को नहीं मिलता, क्योंकि बस की फ़ीस अधिक है। अतः अभिभावकों को स्वयं बच्चे को स्कूल लाना पड़ता है और वापस स्कूल लेने आना होता है, जिसके कारण समय और धन, दोनों की हानि होती है।
- संस्थान परिवर्तन को लेकर अभिभावकों ने कई विचार दिए। कुछ ने कहा कि बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था का प्रावधान होना चाहिए। कुछ ने कहा कि इन बच्चों को केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण देना चाहिए, क्योंकि इन्हें नौकरी नहीं मिलती। कुछ ने कहा कि हम न तो परिवर्तन करने की बात करते हैं और न ही परिवर्तन चाहते हैं। परिवर्तन होना चाहिए, लेकिन संस्थान में नहीं, बल्कि उनके बच्चों में होना चाहिए।
- समय-समय पर अभिभावकों ने निर्देशन एवं परामर्श कार्यक्रमों में भाग लिया। इस सेवा को सभी अभिभावकों ने अच्छा बताया।
- सभी अभिभावकों को भविष्य में चेतना संस्थान से यही आशा है कि उनके बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करे तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर अधिक ध्यान दे।

निष्कर्ष

विभिन्न शोध अध्ययनों से पाया गया कि चार प्रतिशत भारतीय जनसंख्या दिव्यांगता या अक्षमता से ग्रसित है, जिसमें से 70 प्रतिशत अक्षमता की रोकथाम संभव है। भारत में सबसे अधिक पोलियो से ग्रसित जनसंख्या है। प्रति मिनट में एक बच्चा पोलियो का शिकार होता है। भारत के 80 प्रतिशत दिव्यांग या अक्षम व्यक्ति गाँवों से संबंधित हैं, जिनकी देखभाल न के बराबर होती है। केवल ऐसे दो प्रतिशत दिव्यांग या अक्षम व्यक्ति हैं, जिन्हें सुविधाएँ व शिक्षा मिल पाती है। सामान्यतः शहरों में रहने वाले कुछ अक्षम या दिव्यांग, गाँवों के ऐसे विशिष्ट लोगों से थोड़ी अधिक सुविधाएँ प्राप्त कर रहे हैं। क्योंकि उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए निर्देशन एवं परामर्श तथा अन्य सुविधाओं की जानकारी देने के लिए शिक्षित लोग हैं। इस शोध अध्ययन में शोधार्थियों को अध्यापकों की प्रतिक्रियाएँ, विशिष्ट बच्चों की प्रतिक्रियाएँ, माता-पिता के विचारों और संबंधित साहित्य के

© NCERT not to be republished

अध्ययन से उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई।

चेतना संस्थान एक अशासकीय स्वैच्छिक संगठन है। इसका प्रबंध तंत्र, इसकी सफलता, असफलता के लिए ज़िम्मेदार है। चेतना संस्थान का मुख्य उद्देश्य विशिष्ट बच्चों को विशिष्ट शिक्षा प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाना तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें समाज में उचित स्थान व मान-सम्मान दिलाना है। विशिष्ट शिक्षा देने के लिए चेतना संस्थान स्वयं अनेक विशिष्ट कोर्सों का प्रशिक्षण प्रदान करता है।

चेतना संस्थान विशिष्ट बच्चों की शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए कार्य कर रहा है, लेकिन केवल दो ही प्रकार के अक्षम बच्चों को शिक्षा एवं प्रशिक्षण दे रहा है, जिसमें बौद्धिक अक्षमता वाले और श्रवणबाधित बच्चे प्रमुख हैं। शारीरिक दिव्यांग एवं दृष्टिबाधित बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था संस्थान में नहीं है।

चेतना संस्थान ने अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों में भी शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को सहायता देने की बात कही है।

शोधार्थी ने स्वयं के अवलोकन के आधार पर यह भी पाया कि विभिन्न बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को एक साथ एक ही कक्षा में शिक्षित किया जाता है। इस प्रकार जो बालक बौद्धिक रूप से अधिक अक्षम है, उसे काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वे किसी भी विषय को काफ़ी देर से समझ पाते हैं।

विशिष्ट बच्चों को दी जाने वाली शिक्षा में अत्यधिक सहायक सामग्री की आवश्यकता होती है। इस सहायक सामग्री में विशेषकर रंगीन चित्रों एवं मॉडलों का प्रयोग अधिक किया जाना चाहिए। संस्थान में शिक्षण विधियों पर प्रकाश डालने से यह पता चलता है कि बार-बार दोहराने की क्रिया, अनुकरण विधि या फिर बच्चों की रुचि के अनुसार वे अपनी शिक्षण विधि को प्रभावी बनाते हैं, जैसे— गायन सिखाने के लिए बार-बार दोहराने की विधि अधिक उपयुक्त है। ठीक इसी प्रकार श्रवणबाधित बच्चों को शिक्षित करने में, चित्रों का अधिक प्रयोग किया जाता है। ये बच्चे चित्रों एवं मॉडलों में अधिक रुचि लेते हैं तथा किसी भी विषय को आसानी से समझ लेते हैं।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में भी उल्लेख किया गया है कि सरकार दिव्यांगजनों के लिए नियोजित, विशेषकर उनके व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वनियोजन को आसान बनाने और उसमें सहायता करने के लिए, जिसके अंतर्गत रियायती दरों पर ऋण उपलब्ध कराना भी है, योजना (स्कीम) और कार्यक्रम बनाएगी। इस स्कीम के अंतर्गत औपचारिक एवं गैर-औपचारिक वृत्तिक और कौशल प्रशिक्षण स्कीम और कार्यक्रमों में दिव्यांगजनों को सम्मिलित किया जाएगा तथा यह सुनिश्चित किया जाएगा कि दिव्यांगजन को विनिर्दिष्ट प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पर्याप्त सहायता और सुविधाएँ दी जाएँ। साथ ही वर्णित किया गया है कि सरकार ऐसी संस्थाओं की आर्थिक क्षमता और विकास की सीमाओं के भीतर रजिस्ट्रीकृत संस्थाओं को सेवा प्रदान करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। इसके बावजूद भी संस्थान की भविष्य की योजनाओं पर ध्यान देने पर यह पता चलता है कि संस्थान के एक केंद्र का निर्माण करने की आवश्यकता है, जिसमें विशिष्ट

© NCERT not to be republished

कोर्सों का अलग प्रशिक्षण दिया जा सके। छात्रावास की सुविधा भी पर्याप्त नहीं है और सभी प्रकार की चिकित्सा की व्यवस्था संस्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए संस्थान को सरकार से आर्थिक सहायता मिले जिससे यह कार्य संभव हो सके। संस्थान प्रबंधन आर्थिक सहायता के लिए सामाजिक सहयोग की अपेक्षा भी करता है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि चेतना संस्थान विशिष्ट बच्चों के लिए अत्यंत प्रभावी संगठन है। संस्थान का प्रबंधन व शिक्षक अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्य कर रहे हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

- विशिष्ट बच्चों को सामान्य कक्षाओं में लाभान्वित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए विशिष्ट शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।
- विशिष्ट शिक्षा के द्वारा उचित वातावरण देकर सीखने के लिए लगातार प्रेरित करते रहने से विशिष्ट बच्चों में प्रेरणा का अभाव समाप्त होता है।
- विशिष्ट शिक्षा में अक्षम बच्चों की रुचियों का विकास आसानी से किया जा सकता है।
- विशिष्ट शिक्षा अभिभावकों, शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रबंधकों को विशिष्ट बच्चों की समस्याओं को समझने में सहायता प्रदान करती है।
- विशिष्ट शिक्षा, विशिष्ट बच्चों की छिपी हुई अन्य प्रतिभाओं एवं गुणों को उभारकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायता प्रदान करती है।
- विशिष्ट शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बच्चों की शैक्षिक, सामाजिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।
- विशिष्ट शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बच्चों में आत्मविश्वास जाग्रत कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।
- विशिष्ट शिक्षा के द्वारा विशिष्ट बच्चों को विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में समायोजित करने योग्य बनाया जा सकता है। यदि ये बच्चे भली-भाँति सामाजिक परिस्थितियों में समायोजित होंगे तो अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं से बचे रह सकते हैं।
- विशिष्ट शिक्षा के द्वारा आर्थिक क्रियाओं का प्रशिक्षण देकर इन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।
- विशेष शिक्षा के द्वारा इन बच्चों के प्रति समाज के दृष्टिकोण को बदला जा सकता है।

सुझाव

अध्यापकों के लिए सुझाव

- अध्यापकों को सभी विशिष्ट बच्चों पर एक समान ध्यान देना चाहिए।
- अध्यापकों को बच्चों से प्रेमपूर्वक एवं मित्रतापूर्वक व्यवहार रखकर शिक्षण कार्य करना चाहिए।
- अध्यापकों को अधिकाधिक सृजनात्मक होने की आवश्यकता है।
- सभी अध्यापकों को चाहिए कि वे चेतना संस्थान के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करें।
- अध्यापकों को समय-समय पर इन विद्यार्थियों के अभिभावकों से मिलकर उनके बच्चों के क्रियाकलापों के बारे में जानकारी देनी चाहिए।
- अध्यापकों को विशिष्ट बच्चों के व्यावसायिक प्रशिक्षण पर अधिकाधिक ध्यान देना चाहिए।

© NCERT not to be republished

क्योंकि वही उनकी आत्मनिर्भरता का प्रमुख साधन हैं।

- अध्यापक समय-समय पर इन बच्चों को उनके क्रियाकलापों के अनुसार पुरस्कृत करने की व्यवस्था करें। इसके लिए संस्थान प्रबंधन का सहयोग लेना चाहिए जिससे ये बच्चे और अधिक मन और लगन से कार्य कर सकें।
- अध्यापकों को विशिष्ट बच्चों को शिक्षित करते समय धैर्य व सद्भाव बनाए रखना चाहिए।

अभिभावकों के लिए सुझाव

- विशिष्ट बच्चों के प्रति सामान्य बच्चों से अधिक प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।
- विशिष्ट बच्चों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए।
- उनकी रुचि के अनुसार उन्हें शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण देना चाहिए।
- उन्हें दिन-प्रतिदिन की समस्याएँ हल करने योग्य बनाना चाहिए।
- विशिष्ट बच्चों में अच्छी प्रेरणा एवं कौशल के विकास पर बल देना चाहिए।
- इनकी रुचियाँ सामान्य बच्चों से भिन्न होती हैं। इनकी रुचियों के विकास के लिए भिन्न प्रकार की विशिष्ट शिक्षा देनी चाहिए।
- संस्थान के अध्यापकों से समय-समय पर मिलकर अपने बच्चे के बारे में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।
- समय-समय पर उचित चिकित्सा व्यवस्था इन बच्चों को उपलब्ध करानी चाहिए।
- इन बच्चों को शिक्षित-प्रशिक्षित करने में धैर्य व सद्भाव बनाए रखना चाहिए।

प्रबंधन के लिए सुझाव

- अध्यापकों को विशिष्ट बच्चे की उन्नति न होने पर दोषी नहीं ठहराना चाहिए।
- अध्यापकों पर उनके कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्य का बोझ नहीं डालना चाहिए।
- विशिष्ट शिक्षा के अध्यापकों को अतिरिक्त सुविधाएँ देनी चाहिए ताकि वे अपना कार्य काफ़ी लगन व मन लगाकर कर सकें।
- समय-समय पर बच्चों के अभिभावकों का उनके बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए निर्देशन एवं परामर्श देना चाहिए।
- चेतना संस्थान की तरह ही अन्य शाखाएँ कई और शहरों में भी खोलनी चाहिए। जिससे अन्य विशिष्ट बच्चे भी विशिष्ट शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर लाभान्वित हो सकें।

संदर्भ

भार्गव, महेश. 2007. *विशिष्ट बालक—शिक्षा एवं पुर्नवास*. एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा.

© NCERT not to be republished